# विद्युत दर्पण

## पक्षेविसमिति की गृह पत्रिका

अंक -2 जनवरी 2007


### *सम्पादकीय*

श्रीमद भागवतगीता का एक सुप्रसिद्ध वाक्यांश है, ''कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।'' इसका सीधा-सादा अर्थ है कि हमारा अधिकार केवल अपने कर्म पर है, उसके फल पर कदापि नहीं । इसका आशय है कि हमें फल की चिन्ता किए बिना अपना कर्म पूरी निष्ठा, शक्ति, समर्पण एवं एकाग्रता से सतत रूप से करते जाना चाहिए । कर्म के फल की चिन्ता करने से या फल को सामने रखकर कर्म करने से कर्म के प्रति एकाग्रता एवं निष्ठा में कमी आ जाती है । परिणामस्वरूप, कर्म का अपेक्षाकृत कम परिणाम कभी-कभी हमें निराश कर जाता है। एक कलाकार अपनी सारी शक्ति, सारी कल्पना, सारी एकाग्रता अपनी कृति को अधिकाधिक सजीव बनाने में लगा देता है । वह उसमें विभिन्न कोणों से कमियाँ / दोष ढूंढ-ढूंढकर उन्हें यथा संभव दूर करता है और अपने अन्तस की संतुष्टि तक करता जाता है । यही उसके कर्म का प्रथम अपेक्षित फल होता है ।

पक्षेविस भी श्रीमद् भागवत के उसी ब्रहम वाक्य के अनुरूप राजभाषा नीति का अनुपालन करता आ रहा है । इसके अधिकारी-कर्मचारी समय-समय पर अपने कर्म की समीक्षा कर उसमें कमियाँ ढूंढ निकालते हैं और आने वाले समय में उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं । किन्तु उनका लक्ष्य कोई पुरस्कार कभी नहीं रहा । वह तो उनके कर्म से खिंचा चला आया है । पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का वर्ष 2005-06 के लिए राजभाषा विभाग द्वारा प्रथम पुरस्कार (पश्चिम क्षेत्र) प्राप्त करने पर इस संदेश और आग्रह के साथ हार्दिक अभिनन्दन कि वर्तमान और भविष्य में भी हम निष्काम भाव से अपना कर्म पूरी शक्ति, एकाग्रता और निष्ठा से करते जाएंगे ।

वर्ष 2006 अभी-अभी समाप्त हुआ है तथा वर्ष 2007 का पदार्पण हो चुका है । इस अवसर पर आप सबको नव वर्ष की हार्दिक शुभकामना । गत वर्ष के खट्टे-मीठे अनुभवों से सबक एवं प्रेरणा लेकर हम सभी वर्ष 2007 का गर्मजोशी से स्वागत करें और अपने जीवन के हर क्षेत्र में अच्छे से अच्छा करने का प्रयास करें । ईश्वर करे हम सभी अपने-अपने प्रयासों में यशस्वी हों ।

आपका,

**प्रवीणभाई पटेल**
सदस्य सचिव

### *अध्यक्ष, केविप्रा का संदेश*

प्रिय श्री पटेल,

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि आपके कार्यालय को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से पश्चिमी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में वर्ष 2005-06 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा हिंदी में किए गए श्रेष्ठतम कार्य निष्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार मिला है । इसके लिए आपको मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई । यह न केवल आपके कार्यालय के लिए हर्ष का विषय है, बल्कि पूरे के.वि.प्रा. के लिए भी गौरव का विषय है । मुझे आशा है कि भविष्य में भी आप इसी तरह प्रगति करते रहेंगे तथा के.वि.प्रा. के अन्य कार्यालयों के लिए आदर्श स्थापित करेंगे ।

शुभकामना सहित ।

आपका,

**राकेश नाथ**

### गुलदस्ता शुभकामनाओं का !

| | |
|---|---|
| ❖ नव वर्ष की शुभकामनाएँ ! | -हिन्दी |
| ❖ नवे साल दी बहुत बहुत वाधाई होवे ! | -पंजाबी |
| ❖ नव वर्षाच्या हार्दिक शुभेच्छा ! | -मराठी |
| ❖ नवा वरषनी शुभकामना ! | -गुजराती |
| ❖ नतुन बाछरेर शुभ अभिनन्दन ! | -बांग्ला |
| ❖ नव वर्ष आशंसगळ ! | -मलयालम |
| ❖ पुत्तान्डु -वझतुक्कल ! | -तामिल |
| ❖ नूतना संवत्सरा शुभाकांक्षालू ! | -तेलुगु |
| ❖ नवीन वर्षाच्यो परब्यो ! | -कोंकणी |
| ❖ हुशा वर्षदा सुबाश्या गलु ! | -कन्नड |
| ❖ हैप्पी न्यू ईयर ! | -अंग्रेजी |

## परमात्मा की खोज

एक बार द्वारकामाई में श्री साईनाथजी बैठे थे । कुछ भक्त उनको मिलने आये । उन्होंने कहा, साई हम तीर्थ यात्रा पर जा रहे हैं, हमें आशीर्वाद दो । साईबाबा ने कहा, ''जाइये , आराम से आनन्द लीजिए । लेकिन कितने दिन के लिए जा रहे हो ?'' भक्तों ने कहा - हम तो ईश्वर को ढूँढने जा रहे हैं । पता नहीं कितने दिन लगेंगे । साईबाबा ने पूछा, ''और तुम लोगों के बच्चे परिवार ?'' उन्हें इतने दिन कैसे ले जा सकते हैं वे तो इधर ही रहेंगे । साईबाबा ने बताया, ''देखो आप लोगों को तीर्थ यात्रा में जाना है तो जाइये लेकिन थोड़े दिनों में जाकर वापस आइये ।'' अपने बीबी-बच्चों को दु:खी, अकेला छोड़कर आप कौनसे परमात्मा को ढूँढने जा रहे हो ? जो खोया हुआ है उसे ढूँढा जाता है, जो खोया ही नहीं उसे कहाँ ढूँढोगे ? परमात्मा तो अपने अंदर ही है । अपने अंदर का कूड़ा साफ करो तो वह नजर आयेगा ।

श्री रविन्द्र नाथ पांढरे,
सहायक सचिव

## काश ! मैं विषाणु होता

''चित्रगुप्त जरा रिकार्ड देखकर बताइये कि इस आत्मा का अगला जन्म किस योनि में करवाया जाये ?'' मेरे सामने खड़े भैसे पर सवार उस लम्बी मूँछों वाले महाशय ने दूर कोने में बड़े-बड़े रजिस्टरों के बीच बैठे हुए एक आदमी से कहा । पुनर्जन्म की चर्चा सुनते ही मैंने अपनी पसंद-नापसंद कहने के लिए यम लोक के उस पदाधिकारी से विनती की, जिसे उन्होंने अपना भारी-भरकम सिर हिला कर मंजूर किया । मैं बोला, ''महाराज, आप मुझे एक विशेष प्रकार के विषाणु की योनि में जन्म दीजिए जो घूसखोर राजनीतिज्ञों और नौकरशाहों के शरीर में जाकर, घूसखोरी के लिए जिम्मेदार जीन्स (Genes) को नष्ट कर सके और उस प्रकार के जीन्स का निर्माण कर सके, जो अहिंसा, प्रेम, करूणा, सहिष्णुता, नीतिमत्ता, धर्म निरपेक्षता आदि मूल्य विकसित कर सके । जब तक उस विशेष प्रकार के विषाणु का जन्म नहीं होता तब तक एक महान कल्याणकारी राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता ।''

तथास्तु कहने के लिए यमराज अपना हाथ उठा ही रहे थे कि उतने में वहाँ खादी के वस्त्रों में सज्ज गाँधी टोपी पहने हुई एक दूसरी आत्मा प्रकट हुई । नाले और बाँध उस पेट में दफन हो चुके थे । उसके हाथ में एक पैकेट भी था जो उसने दोनों हाथ जोड़कर यमराज के हाथ में थमा दिया । मैं कौतुहलवश उस पैकेट को देख रहा था । यमराज ने मेरा ध्यान भंग करते हुए कहा ''हे जीवात्मा ! तेरे पूरे मनुष्य जीवन का हिसाब किताब देखकर हम तुम्हें मच्छर योनि में जन्म दे रहे हैं ।'' दूसरे ही क्षण मैंने अपने आपको एक गंदे नाले में पंख फड़फड़ाते हुए पाया ।

जगदीश राठौड़
सहायक निदेशक श्रे.I

## समाचार दर्पण

- पक्षेविसमिति में कार्यरत श्री सुकुमार हानरा, कनिष्ठ अभियंता की सहायक अभियंता के पद पर पदोन्नति हुई है । हार्दिक बधाई !
- श्री हरिलाल हरदोइया निजी सचिव, पक्षेविसमिति अधिवर्षिता की आयु में पहुँचने पर दिनांक 31.12.2006 की अपराह्न से सेवा निवृत्त हुए हैं । उनके सुखी, स्वस्थ और सक्रिय जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।
- दिनांक 20.11.2006 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में श्री मोरेश्वर धकाते, कार्यपालक अभियंता ने कम्प्यूटर के आधारभूत ज्ञान विषय में व्याख्यान दिया, जिसका कार्यालय के 10 कार्मिकों ने लाभ उठाया ।
- आईएसओ 9001:2000 पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत श्री गुजराल, उप.निदे., केविप्रा, नई दिल्ली, ने दिनांक 6 एवं 7 नवम्बर 2006 को कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मार्गदर्शन दिया ।
- केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2006 के दौरान आयोजित हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों में कार्यालय के कुल 5 कार्मिकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया ।
- राजभाषा विभाग द्वारा प्रायोजित सी- डेक, मुंबई के माध्यम से आयोजित दिसम्बर 2006 माह के सत्र में ''हिन्दी में कंप्यूटर पर आधारभूत ज्ञान'' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में कार्यालय के 2 कार्मिकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया ।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों हेतु केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, वरसोवा, मुंबई में सितम्बर माह में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया तथा भाषण प्रतियोगिता में श्री लक्ष्मण गुप्ता, हिन्दी अधिकारी ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया । हार्दिक बधाई !

| | | |
|---|---|---|
| छह महत्वपूर्ण शब्द | - | मैं मानता हूँ मैंने गलती की । |
| पांच महत्वपूर्ण शब्द | - | तुमने बहुत अच्छा काम किया । |
| चार महत्वपूर्ण शब्द | - | आपकी क्या राय है । |
| तीन महत्वपूर्ण शब्द | - | जैसा आप चाहें । |
| दो महत्वपूर्ण शब्द | - | आपका धन्यवाद । |
| एक महत्वपूर्ण शब्द | - | हम । |
| बेहद गैर जरूरी शब्द | - | मैं । |